भगत सूरदास - सबद १

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥

रागु सारंग, भगत सूरदास, गुरु ग्रंथ साहिब, १२५३

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥
हरि के संग बसे हरि लोक ॥
तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥१॥ रहाउ ॥
दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥
आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥१॥
सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥
सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥२॥१॥८॥

सार: प्रतिबद्धता के वचन कभी-कभी पद्धति का रूप ले लेते हैं और भावना तथा बार-बार दोहराए गए व्यवहारों से निर्मित आदतों में बदल जाते हैं। आलोचनात्मक चिंतन का अभ्यास करके, हम इन पद्धितियों को पहचानना शुरू कर सकते हैं। यह पहचान उत्तेजनात्मक प्रतिक्रिया और क्रिया के बीच एक स्थान बनाती है। उस स्थान के भीतर, हमारी प्रतिबद्धताएं सृष्टि की एकता के साथ सचेत रूप से जुड़ सकती हैं। ऐसा सामंजस्य स्वाभाविक रूप से हमें उन संबंधों की ओर ले जाता है जो एकता और व्यक्तिगत विकास को बढ़ावा देते हैं जबकि हमें उन प्रभावों से दूर रखते हैं जो हमारी जागरूकता को बाधित करते हैं।

छाडि मन हरि बिमुखन को संगु ॥
हे मन, उन लोगों से दूर रहो जो सृष्टि की एकता के प्रति समर्पित नहीं हैं। यह मार्गदर्शन ऐसे विचारों, कर्मों और संगति को पोषित करने का सुझाव देता है जो हमारी आध्यात्मिक उन्नति और एकता की भावना को बढ़ावा देते हैं।

हरि के संग बसे हरि लोक ॥
जो लोग सर्वव्यापी चेतना को अपने भीतर धारण करते हैं, वह उसी चेतना की संगति में जीते हैं। यह उस प्रबुद्ध अवस्था को दर्शाता है जहाँ व्यक्ति ऐसे विचारों, कार्यों और संगति के साथ तालमेल बिठाता है जो अस्तित्व के मूल तत्व के साथ गूंजते हैं।

तनु मनु अरपि सरबसु सभु अरपिओ अनद सहज धुनि झोक ॥१॥ रहाउ ॥
पूर्णता प्राप्त करने के लिए शारीरिक और मानसिक समर्पण, पूर्ण आत्म-समर्पण की अवस्था को पोषित करता है, जो बदले में, शांति और सहज प्रशांति की सुरीली धुन उत्पन्न करता है। सभी प्रकार के भय और संदेह के आगे झुककर, मन इन बाधाओं को पार कर सकता है और सहज आनंद की अवस्था तक पहुँच सकता है। (१)(विराम)

दरसनु पेखि भए निरबिखई पाए है सगले थोक ॥
आध्यात्मिक दृष्टि का अनुसरण करके, हम स्वयं को नकारात्मकता से मुक्त कर सकते हैं और असीम संभावनाओं के द्वार खोल सकते हैं। अर्थात, जैसे-जैसे आप ज्ञान को विकसित करते हैं, आप सार्थक अंतर्दृष्टि और परिवर्तनकारी अनुभवों के द्वार खोलते हैं।

आन बसतु सिउ काजु न कछूऐ सुंदर बदन अलोक ॥१॥
वह सर्वव्यापी चेतना अब हमारे भीतर ही विद्यमान है, इस अदृश्य, सर्वत्र उपस्थित शक्ति की दीप्तिमान सुंदरता को निहारने से बड़ा कोई कार्य नहीं है। यह आंतरिक पवित्रता और प्रशांति की पहचान को दर्शाता है जहाँ सांसारिक विषय-वस्तुएँ उपस्थित तो रहती हैं किंतु अब वह हमारी चेतना पर हावी नहीं होतीं। (१)

सिआम सुंदर तजि आन जु चाहत जिउ कुसटी तनि जोक ॥
सर्वव्यापी स्रोत की सुंदरता को छोड़कर, नश्वर वस्तुओं में सम्मान और संतोष ढूँढ़ना, मान-सम्मान की इच्छा करना उतना ही हानिकारक है जितना कि किसी कुष्ठ रोगी के शरीर पर जोंक का होना।

यह मन की उस प्रवृत्ति को उजागर करता है जिसके तहत वह संतुष्टि को नज़रअंदाज़ करके अस्वस्थ इंद्रिय-सुखों को प्राथमिकता देता है, यह भूल करते हुए कि वह उसके लिए वास्तव में लाभदायक हैं।

सूरदास मनु प्रभि हथि लीनो दीनो इहु परलोक ॥२॥१॥८॥
सूरदास कहते हैं कि उनका मन उस सर्वव्यापी चेतना के हाथों में है जो उन्हें अज्ञात लोकों की अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। यह संकेत है कि सच्ची संतुष्टि बाहरी स्रोतों से नहीं मिलती बल्कि आंतरिक सामंजस्य के माध्यम से ही प्राप्त होती है। (२)(१)(८)

तत्त्व: गुरु अर्जन ने भक्त सूरदास के 'मन' और हृदय को 'संघ', 'बेमुखन' की संगति से दूरी बनाने के लिए दिए गए सम्मोहक संदेश का सशक्त रूप से समर्थन किया जो उस अज्ञानता का प्रतीक है जो सृजन की आवश्यक एकता, 'हर' को गले लगाने के लिए आवश्यक ज्ञान को खारिज करता है। इस ज्ञान पर ध्यान देकर, हम गहन समझ और सामंजस्यपूर्ण ताने-बाने से अपना संबंध मज़बूत कर सकते हैं जो हम सभी को एक साथ बांधता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**
Oneness In Diversity Research Foundation
वेबसाइट: OnenessInDiversity.com
ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com